International Journal of Sanskrit Research 2016; 2(1): 08-09

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2016; 2(1): 08-09
© 2016 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-11-2015
Accepted: 15-12-2015

डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

Correspondence
डॉ शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हिप्र

भारतीय ज्योतिष–उद्भव और विकास

डॉ. शिवदत्त शर्मा

भारतीय दर्शन के अनुसार भारतीय ज्योतिष का इतिहास भी बहुत पुराना है। विश्व में जिन दर्शनों के कारण भारत की प्रसिद्धि है, उनमें ज्योतिष–शास्त्र भी एक है। भारतीय विद्वानों के अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वानों ने भी मुक्त कण्ठ से इसे शास्त्र के रूप में मान्यता दी है, तथा इसके महत्व को स्वीकार किया है। इस महान दर्शन का मूल भारत में ही है, इसमें कोई सन्देह नहीं है तथा न ही विश्व में किसी को आपत्ति है।

भारतीय ज्योतिष के विकास की परम्परा को एकत्रित करना सरल नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि एक तो इसके प्रारम्भिक काल अथवा उद्भव का वास्तविक ज्ञान नहीं है। भारतीय ज्योतिष के विकास की परम्परा को सुविधा के लिए इस प्रकार विभाजित किया जा सकता है–[1]

1 पूर्व प्रारम्भिक काल– ई पू 1000 से पूर्व का काल
2 उद्भव काल– ई पू 1000 से ई पू 500 तक
3 आदि काल – ई पू 500 से ई 500 तक
4 पूर्व मध्यकाल– ई 500 से ई 1000 तक
5 उत्तरमध्यकाल– ई 1000 से ई 1600 तक
6 आधुनिक काल – ई 1601 से ई 1951 तक

अब सविस्तार भारतीय ज्योतिष के उद्भव एवं विकास की परम्परा का सिंहावलोकन किया जाएगा।

1 पूर्व.–प्रारम्भिक काल

यह वह समय है जब ज्योतिष सम्बन्धी साहित्य उपलब्ध नहीं है, जिसका अवलोकन करने के उपरान्त ज्योतिष के प्रारम्भिक काल का मूल्यांकन किया जा सके। इस काल के विषय में इतना संकेत अवश्य मिलता है कि इस काल में भी भारतीयों को काल–ज्ञान अवश्य था। दिन, रात, पक्ष, मास, अयन, और वर्ष आदि काल के भागों का भारतीयों को सम्यक् ज्ञान था। यह भी प्रमाण मिलते हैं कि भारतीय आकाश में ग्रह और नक्षत्रों को देखकर कालांगों को जान लेते थे।

2 उद्भव काल

प्रारम्भिक काल के साहित्य में ज्योतिष–शास्त्र से सम्बन्धित साहित्य स्वतंत्र रूप से प्राप्त नहीं होता, फिर भी ज्योतिष के बारे में प्रभूत जानकारी अवश्य प्राप्त होती है। वैदिक साहित्य में प्रारम्भ में ज्योतिष–शास्त्र के अनेक सूत्र प्रसंग वश उपलब्ध होते हैं। इन्हीं सूत्रों के आधार पर ही सूत्रों को एकत्रित कर बाद में ज्योतिष–शास्त्र का मूल भूत स्वरूप तैयार किया गया। वेदों, ब्रहमण–ग्रंथों, आरण्यकों, उपनिषदों में ज्योतिष–सम्बन्धी अनेक चर्चाएं हैं। ऋतु, अयन, वर्ष, युग, ग्रहकक्ष, नक्षत्र, ग्रह, राशि, ग्रहण, विषुव, दिन वृद्धि आदि ज्योतिषीय शब्दों की चर्चा विस्तार से हुई है।

तैतिरीय संहिता में 12 मासों के नामों का उल्लेख है। ऋग्वेद् में वर्ष के 12 मास तथा 360 दिन का उल्लेख है। ऋग्वेद् में ही ऋतु, अयन, आदि शब्दों का अनेक स्थानों पर प्रयोग मिलता है। इसी में शरत् और हेमन्त शब्दों का उल्लेख है। गोपथब्राह्मण में हायन शब्द का तथा वाजसनेयी संहिता में समा शब्द का प्रयोग मिलता है।

अथर्व वेद में 28 नक्षत्रों का उल्लेख मिलता है, तथा तैतिरीय ब्राह्मण में विषुव का कथन किया गया है। इस तरह अनेक सन्दर्भों में ज्योतिषीय नामों का उल्लेख इस बात को पुष्ट करता है कि इस काल तक आत–आते ज्योतिष का अस्तित्व स्थापित हो चुका था। [2]

3 आदि काल

इस काल तक आते–आते ज्योतिष पर स्वतन्त्र ग्रंथ लिखे जाने आरम्भ हो गए थे। ज्योतिष वेदांगों में सम्मिलित था। शिक्षा, व्याकरण, निरूक्त, छन्द और ज्योतिष ये छः वेदों के अंग माने गए हैं। ये वेदों

का अर्थ समझने में सहायक होते हैं। वेदांग–ज्योतिष में तीन ग्रंथ माने जाते थे–ऋग्वेदज्योतिष, यजुर्वेदज्योतिष, और अथर्ववेद ज्योतिष। ऋग्वेद ज्योतिष के संग्रहकर्ता लगध नाम के ऋषि थे।
सूर्य–प्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति आदि रचनाएं आदि काल में ही रचीं गईं थीं। कल्प तरु, निरुक्त, व्याकरण, स्मृतियां, महाभारत, इसी काल की रचनाएं इस काल में उल्लेखनीय ग्रंथ और ग्रंथकारों के नाम इस प्रकार हैं–अठारह प्रवर्तक आचार्य, पितामह सिद्धान्त, वसिष्ठ सिद्धान्त, रोमक सिद्धान्तं, पौलिश सिद्धान्त, सूर्य सिद्धान्त, नारद सिद्धान्त, गर्गसिद्धान्त, पराशर, ऋषिपुत्र, आर्यभट्ट प्रथम, अंग विज्जा, कालकाचार्य, द्वितीय आर्यभट्ट, लल्लाचार्य आदि।[3]

4 पूर्व मध्य काल

यह वह काल है जिसमें ज्योतिष शास्त्र की प्रगति अपनी उंचाईयों को छूती है। यही वह काल है जिसमें होरा, सिद्धान्त और संहिता आदि महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना हुई जो ज्योतिष के अंग कहलाते हैं। [4] इसके अतिरिक्त बीजगणित, अंकगणित, रेखागणित एवं फलित ज्योतिष का अभूतपूर्व विकास हुआ। आचार्य वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त इसी काल में हुए। इस पूर्वमध्य काल में उल्लेखनीय ज्योतिषग्रंथ और ज्योतिर्विदों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–[5]

1 वराह मिहिर – बृहद्ज्जातक
2 कल्याण वर्मा – सारावली
3 ब्रह्म गुप्त – ब्रह्म स्फुट सिद्धान्त
4 मुंजाल – लघुमानस
5 महावीराचार्य –ज्योतिषपटल और गणितसार संग्रह
6 महोत्पल – प्रश्न ज्ञान
7 श्रीपति – पाटी गणित, बीजगणित, सिद्धान्त–शेखर, रत्नावली आदि।
8 चन्द्रसेन – केवल ज्ञान होरा
9 श्रीधर – गणितसार, जातक तिलक आदि
10 भट्टवोसरि – आयज्ञानतिलक

5 उत्तरमध्यकाल

प्रायः ई0 1001 से 1600 ई0 तक उत्तरमध्यकाल ज्योतिष–शास्त्र की व्याख्या, आलोचना और मौलिक ग्रंथों की रचना के लिए प्रसिद्ध है। इस काल में ज्योतिष में भी अनेक नए प्रयोग हुए। इस काल की प्रमुख विशेषता ग्रहगणित के सभी अंगों के संशोधन के लिए प्रसिद्ध है। इसी काल की एक और विशेषता यन्त्र–निर्माण है। फलित ज्योतिष में जातक, मुहूर्त, सामुद्रिक, और प्रश्न नामक अंगों से सम्बन्धित साहित्य भी इस अवधि में रचा गया। महान् ज्योतिषी भास्कराचार्य भी इसी युग में हुए। इस काल के अन्य उल्लेखनीय ज्योतिर्विद इस प्रकार हैं–[6]

1 भास्कराचार्य – सिद्धान्त शिरोमणि और मुहूर्त्त चिन्तामणि
2 दुर्ग देव – अर्ध काण्ड और रिट्ठ समुच्चय
3 उदय प्रभदेव – व्यवहारचर्या
4 मल्लिषेण – आयसद्भाव
5 राजादित्य – व्यवहार गणित, क्षेत्रगणित, जैन सूत्र टीकोदाहरण
6 बलाल सेन – संहिता रूपअद्भुतसागर
7 नरचन्द्र उपाध्याय – बेडाजातकवृत्ति आदि
8 पद्मप्रभ सूरी – भुवन दीपक
9 अर्हद दास – यन्त्र राज
10 मकरन्द – ग्रह लाघव सारणी
11 केशव – गणित दीपिका, ग्रहकौतक
12 गणेश – ग्रहलाघव, लीलावती–टीका
13 ढुण्ढिराज – जातकाभरण
14 नीलकण्ठ – ताजिक नीलकण्ठ
15 राम दैवज्ञ – मुहूर्त चिन्तामणि
16 नारायण – मुहूर्त मार्तण्ड

उपरोक्त विवरण इस तथ्य का प्रमाण है कि इस युग में प्रभूत ज्योतिष–शास्त्र का उत्थान हुआ। इसके उपरान्त भी इसका विकास अनवरत रूप से चलता रहा है। आधुनिक काल में भी इसका विकास अवरूद्ध नहीं हुआ। जिसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है–

6 आधुनिक काल

1601 ई0 से 1951 ई0 तक इस काल की कालावधि मानी जाती है। इस काल में इस्लाम के आगमन के साथ ज्योतिष–शास्त्र कुप्रभावित हुआ तथा इसका विकास उस गति से नहीं हो पाया। आधुनिक युग में अंग्रेजों के वर्चस्व के कारण तथा पाश्चात्य प्रभाव के कारण भी इस शास्त्र के स्वरूप में परिवर्तन हुआ, जिसे ज्योतिष–शास्त्र का पुनरूद्धार कहा जा सकता है। इस काल में भारतीय ज्योतिष के ग्रंथों के अंग्रेजी अनुवाद और गम्भीर अनुसन्धान होने लगे। भारतीय गणित और पाश्चात्य गणित की परस्पर तुलना होने लगी। अनेक मौलिक ग्रंथ भी रचे गए। कुछ महत्वपूर्ण रचनाओं का विवरण यहाँ देना आवश्यक है–

1 मुनीश्वर – सिद्धान्त सार्वभौम
2 दिवाकर – जातकपद्धति
3 कमला कर भट्ट– सिद्धान्त तत्व विवक
4 नित्यानन्द – सिद्धान्तराज
5 महिमोदय – ज्योतिषरत्नाकर
6 लब्ध चिन्तामणि –जन्म पत्रपद्धति
7 मेघविजगणि – मेघमहोदय आदि
8 उभयकौशल – विवाहपटल, चमत्कार चिन्तामणि
9 बाघजी मुनि – तिथि सारणी
10 यशस्वतसागर –यशोराजपद्धति
11 बापूदेव मुनि – त्रिकोणमिति, बीजगणित, अव्यक्त गणित
12 नीलाम्बर झा – गोलप्रकाश
13 सामन्त चन्द्रशेखर – सिद्धान्तदर्पण
14 डॉ गोरख प्रसाद – सौर–परिवार
15 सम्पूर्णानन्द – ज्योति र्विनोद
16 महावीर प्रसाद श्रीवास्तव– विज्ञान भाष्य

भारतीय ज्योतिष के विकास में अनेक विभूतियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस श्रृंखला में सबसे प्रमुख नाम महाराज सवाई जय सिंह का है जिन्होंने भारतीय ज्योतिष के वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपने कार्यकाल में जयपुर, दिल्ली, उज्जैन, वाराणसी और मथुरा में अनेक वेधशालाएं बनवाईं। दूसरी ओर भारत की भव्य वैज्ञानिक परम्परा की खोज भी अनेक विद्वानों ने की है। इन विद्वानों द्वारा लिखी गयी पुस्तकों, पत्रिकाओं, अनुसन्धान–लेखों, में भारत में विद्युत–विज्ञान, मैकेनिक्स, धातु–विज्ञान, वायु–विज्ञान, जलयान–विज्ञान, स्थापत्य कला, रसायनशास्त्र आदि के साथ–साथ गणित के स्त्रोतों को खोज निकाला है। [7]

इस तरह यह स्पष्ट है कि भारत में ज्योतिष का मूल है, जो विस्तार पा कर विश्व में विराट आकार पा गया है। भारत ही ज्योतिष का जन्म दाता है तथा यहीं पर ही सदियों से इस पर अनुसन्धान होता आया है। यह अनुसन्धानों का ही परिणाम है कि आज भारतीय ज्योतिष इतना स्मृद्ध हो गया है। [8] यह अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है तथा भविष्य में भी इसके चलते रहने की पूर्ण आशा है।

सन्दर्भ सूचि–

1 श्री गोरख प्रसाद भारतीय ज्योतिष का इतिहास पृ0 56
2 उपरोक्त उपरोक्त पृ0 77
3 नील कण्ठ ताजिक नीलकण्ठ पृ0 56
4 डॉ सूर्य कान्त संस्कृत वाड्मय का विवेचनात्मक इतिहास पृ0 78
5 दीक्षित शंकर वाला कृष्ण भारतीय ज्योतिष शास्त्र पृ0 34
6 पंडित केवल आनन्द जोशी भारतीय गणित ज्योतिष पृ0 113
7 वराह मिहिर बृहज्जतक पृ0 23
8 भास्कराचार्य सिद्धान्त शिरोमणि पृ0 76